महानिदेशक की कलम से

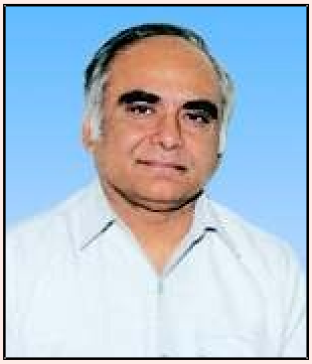

मुझे भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद द्वारा संपन्न कार्यों पर इस वर्ष का प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नता हो रही है। परिषद का अधिकांश कार्य स्वास्थ्य/आयुर्विज्ञान अनुसंधान के क्षेत्र में सुविधाओं के विस्तार और उनकी प्रगति के नियोजन पर केन्दित रहा। इस वर्ष के दौरान, माननीय केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डॉ अन्बुमणि रामदॉस ने दिनांक 30 अक्टूबर, 2006 को *आई सी एम आर स्कूल्स ऑफ पब्लिक हेल्थ* को राष्ट्र को समर्पित किया, उन्होंने चेन्नई स्थित राष्ट्रीय जानपदिक रोगविज्ञान संस्थान में एक नवीन भवन का भी उद्घाटन किया। परिषद के पुणे स्थित *माइक्रोबियल कंटेनमेंट कॉम्पलेक्स* को बढ़ाकर एक संस्थान के स्तर का दर्जा दिया गया। परिषद के मुम्बई स्थित राष्ट्रीय प्रजनन स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान में एक राष्ट्रीय पूर्वचिकित्सीय प्रजनन एवं आनुवंशिक विषविज्ञान केन्द्र की स्थापना की गई।

भारत में किए जाने वाले सभी चिकित्सीय परीक्षणों के भावी पंजीकरण हेतु नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान सांख्यिकी संस्थान में चिकित्सीय परीक्षण पंजीकरण केन्द्र भारत की स्थापना की गई।

स्वास्थ्य अनुसंधान के विभिन्न क्षेत्रों में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग हेतु भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद और मिनेसोटा विश्वविद्यालय तथा परिषद–आई एन सी एल ई एन के बीच सहमति ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए।

परिषद के संस्थानों/केन्द्रों द्वारा देश भर में जापानी मस्तिष्कशोथ, चिकनगुण्या, डेंगी और इंफ्लुएंज़ा के अनेक प्रकोपों पर अध्ययन किए गए।

परिषद एच आई वी/एड्स हेतु उपयुक्त वैक्सीन के विकास और सीरम निगरानी कार्य से संबद्ध है तथा अनेक महत्वपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त हुई हैं।

वर्ष 2006–07 के दौरान परिषद द्वारा कुल 913 तदर्थ अनुसंधान परियोजनाओं और 477 शोधवृत्तियों को वित्तीय सहायता प्रदान की गई। वर्ष 2006 के दौरान परिषद के वैज्ञानिकों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय जर्नलों में 521 शोध पत्र प्रकाशित किए गए जिससे शोध पत्रों की संख्या में महत्वपूर्ण वृद्धि का पता चलता है। *इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च* का इंपैक्ट फैक्टर वर्ष 2005 में 0.869 से बढ़कर वर्ष 2006 में 1.224 हो गया। प्रतिवेदित वर्ष के दौरान कुल 13 पेटेंट फाइल किए गए।

मैं माननीय केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डॉ अन्बुमणि रामदॉस के निरन्तर सहयोग और प्रोत्साहन के लिए आभारी हूं जिनके कारण विगत वर्षों के दौरान परिषद में भारी वृद्धि और परिवर्तन की स्थितियां देखी गईं। जिसके परिणामस्वरूप न केवल स्वास्थ्य अनुसंधान बल्कि राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय नेटवर्किंग और विश्वस्तरीय मान्यता में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है।

मैं परिषद और इसके संस्थानों/केन्द्रों के सभी वैज्ञानिकों, तकनीकी कर्मचारियों और प्रशासन स्टाफ के कठिन परिश्रम और समर्पण के प्रति आभार व्यक्त करता हूं जिसके परिणामस्वरूप हम स्वास्थ्य/आयुर्विज्ञान अनुसंधान के क्षेत्र में विकास और प्रगति के पथ पर अग्रसित होने में समर्थ हुए हैं।

निर्मल कुमार गांगुली

महानिदेशक